Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षित नारी की भूमिका का संक्षिप्त मूल्यांकन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षित नारी की भूमिका का संक्षिप्त मूल्यांकन

Raj Singh

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

सार – *भारतीय परम्परा में स्त्री को सदैव ही सम्मानजनक स्थान दिया जाता था। उसे देवी, माँ या सहचरी कह कर पुकारा जाता था, परन्तु इसके बावजूद भी उसे सदियों तक विद्या की देवी सरस्वती की पूजा करने से विमुख रखा गया। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में– महिलाओं को सदैव असहायता तथा दूसरों पर दासवत निर्भरता का प्रशिक्षण दिया गया। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन तथा मध्यकालीन समाज में स्त्रियों को अज्ञानता के आवरण में रखकर पिता, पति या पुत्र के दासत्व को स्वीकार करने के कर्त्तव्य का ज्ञान देने मात्र को ही उस समय की स्त्री शिक्षा की इतिश्री समझा जाता था।*

----------X----------

प्रस्तावना –

आज स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करके समाज के महत्वपूर्ण कार्यों में पुरुषों के साथ योगदान कर रही हैं, वे आज घर की चार दीवारी के अन्दर घुटकर भाग्य के भरोसे बैठी, यन्त्रवत कार्य करने वाली अनपढ़ कठपुतली मात्र ही नहीं है। वरन वे अज्ञानता के आवरण से बाहर आकर तथा ज्ञान के आलोक में परिपूर्ण होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से स्पर्धा करने के लिए तत्पर है। वास्तव में आज स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गये हैं। स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन का प्रमुख श्रेय स्त्री शिक्षा के प्रसार तथा प्रचार को है। स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी तथा वर्तमान में इसकी स्थिति तथा समस्याऐं क्या है, इन्हीं बातों का अध्ययन हम इस लघु शोधपत्र में करेंगें। हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ और हमारी शिक्षा का पदार्पण आधुनिक भारत के सन्दर्भ में हुआ। स्वतंत्र भारत में महिला की सामाजिक स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहा था। महिला जिन बन्धनों में बंधी हुई थी, वह धीरे–धीरे बन्धनों से मुक्त होती जा रही थी। जिस स्वतंत्रता से उसे वंचित कर दिया गया था, वह उसे पुनः प्राप्त हो रही है। महिलाओं के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण बदल रहा है। उनकी मान्यताऐं भी बदल रही हैं। भारतीय संविधान ने भी महिला को समकक्षता प्रदान करते हुए घोषित किया है–''राज्य किसी नागरिक के विरूद्ध केवल धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान पर कोई विभेद नहीं करेगा।'' यथार्थ में महिलाओं ने अपने वास्तविक विकल्प को जानना और उसको पहिचानना शुरू कर दिया है। और वह अपनी गिरी हुई दशा के प्रति सचेत हुई है। यही कारण है कि आधुनिक भारत महिला जागरण का युग बन गया है, और महिला शिक्षा के सभी क्षेत्रों में विलक्षण क्रान्ति दिखाई दे रही है आज हम देखते हैं कि लड़कियां कला और विज्ञान के अतिरिक्त गृह विज्ञान, हस्तकला, शिल्पकला की भी शिक्षा प्राप्त करने को भी स्वतंत्र हैं। मैडिकल और इन्जीनियरिंग कॉलेजों में लड़कियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। उच्च स्तर तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सबसे अधिक अंक प्राप्त कर महिलाओं ने सिद्ध कर दिया है कि उनका मानसिक स्तर पुरुषों से किसी प्रकार कम नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

बोर्ज (2008) के अनुसार :– ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिला के समाज है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तब तक हमारे कार्य का प्रभाव हीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा उसकी पुनरावृत्ति भी हो सकती है।''

बेस्ट (2011) के अनुसार :– ''व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहीत व सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।''

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि प्रकाशित साहित्य की भण्डार गृह की चाबी महत्वपूर्ण परिकल्पनाओं के स्रोत के द्वारा खोल सकती है तथा समस्याओं के समाधान में सहायता देकर चयन प्रक्रिया तथा परिणामों के प्रतीत प्रस्तुतिकरण के लिए पृष्ठभूमि तैयार करती है।

एस० सिंधयी (2011) ने कॉलेज के लड़कियों की सामाजिक रूचि और मानसिक प्रवृत्तियों का अध्ययन ''सोशल इन्टरेस्ट एण्ड एटीट्यूट ऑफ गर्ल्स स्टूडेन्ट्स ऑफ कॉलेज ऑफ इन्दौर सिटी'' के अन्तर्गत किया। जिसके उद्देश्य निम्न थे–

(1) लड़कियों की सामाजिक रूचि व मानसिक प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

(2) इन प्रवृत्तियों का पारिवारिक संस्थाओं के भविष्य पर प्रभाव को देखना।

(3) छात्राओं पर वातावरण अनुवांशिकता का प्रभाव सामाजिक रूचि व प्रवृत्ति को देखना।

इस अध्ययन के लिए उन छात्राओं का चयन किया गया जो विद्यालय में अध्ययन कर रही थीं इनका चयन असंगत रीति के द्वारा किया गया। इन्दौर स्कूल के 15 प्रधानाचार्यों का

www.ignited.in

साक्षात्कार किया गया इस अध्ययन मं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग हुआ। आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली व साक्षात्कार द्वारा किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशतता के आधार पर किया गया। जिसकी मुख्य प्राप्तियाँ निम्न लिखित हैं–

(1) अधिकतर लड़कियों का मुख्य जोर रोजगार, शादी की स्थिति व पारिवारिक वातावरण के प्रति था।

(2) कुछ लड़कियों ने भविष्य की पारिवारिक संस्था में रूचि दिखाई।

(3) युवा लड़कियों की सामाजिक रूचि और प्रवृत्ति पर्याप्त परिपक्व व स्थाई थी।

(4) अधिकतर छात्राओं ने इस विचार का समर्थन किया कि शिक्षा की भूमिका सामाजिक रूचि में सुधार करती है।

पाटिल, काकड़े पी०एस० (2012) ने आधुनिक समाज में शिक्षित नारी की भूमिका के सन्दर्भ में नारी शिक्षा के प्रवर्तकों के विचारों का अध्ययन ''इट एटैम्पटस टू स्टडी वियुपोइन्ट ऑफ दा प्रोटागोनिष्ट ऑफ वीमैन्स एजुकेशन इन दा मोर्डन पीरियड रिगार्डिंग द रोल ऑफ एजुकेटिड वीमेन्स'' के अन्तर्गत किया। जिसके उद्देय–

(1) आधुनिक समय में महिला शिक्षा के प्रवर्तकों के दृष्टिकोण का पता लगाना। इस अध्ययन के लिए आंकड़ों का चयन अध्यापकों, डाक्टर्स, इन्जिनियर्स, वकील, रिटायर्ड व्यक्ति व पढ़ी लिखी महिलाओं से प्राप्त किया गया। कुल मिलाकर 275 महिलाऐं व 225 व्यक्तियों पर शोध कर उनके विचारों को सम्मिलित किया गया।

(2) आधुनिक समय में महिला शिक्षा के प्रवर्तकों की आकांक्षा का अध्ययन पढ़ी लिखी महिलाओं के सन्दर्भ में करना।

आंकड़ों का चयन प्राथमिक व द्वितीयक दोनों स्रोतों से प्राप्त किया गया, प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली व विभिन्न लोगों की राय द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया जिसकी मुख्य प्राप्तियां निम्न थीं–

(1) शिक्षा महिलाओं की तरक्की व्यवसायिक योग्यता दक्षता व मानसिक योग्यता में सहायता कर सकती है।

(2) शिक्षा महिलाओं को जिम्मेदार माता बनाती है व बच्चों को वैज्ञानिक तरीके से देखभाल करने में सहायता करती है।

(3) अधिकतर माता–पिता परिपक्व लड़कियों को सहशिक्षा वाले स्कूलों में भेजना चाहते थे।

(4) अशिक्षित परिवारों में ड्रॉप आउट अधिक पायी गयी।

शोध विधि

साधारणतया मौलिक अनुसधानों के द्वारा तीन प्रकार के प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है अर्थात् शोध कार्य किसी तथ्य से सम्बन्धित होता है और तथ्य के सम्बन्ध में तीन प्रकार के प्रश्न किये जा सकतक हैं क्या?, क्यों? और कैसे? यदि इन प्रश्नों के उत्तर साहित्य में उपलब्ध हैं तो इसके लिए शोध कार्य किया जाता है। यदि 'क्या' प्रश्न का उत्तर ज्ञात करना होता है तो ऐतिहासिक अथवा वर्णनात्मक तथा सर्वेक्षण शोध विधियों का प्रयोग किया जाता है इसके अतिरिक्त 'क्यों' प्रश्न का उत्तर जानने के लिए प्रयोगात्मक शोध के द्वारा 'कैसे' प्रश्न का उत्तर जानने के लिए प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार अनुसंधानों में मूलरूप से तीन विषयों का प्रयोग किया जा सकता है।

1. ऐतिहासिक अथवा वर्णनात्मक शोध विधि।
2. सर्वेक्षण शोध विधि
3. प्रयोगात्मक शोध विधि

शोध उपकरण का प्रशासन एवं अंकन

शोध अध्ययन से सम्बन्धित शोध उपकरण का निर्माण करने के पश्चात् अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शोध उपकरण का प्रशासन किया गया। शोध उपकरण का प्रशासन दो महाविद्यालयों में किया गया।

उपकरण का अंकन करने हेतु 20 छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली भरने के लिए दी गयी थी और उन से प्राप्त आँकड़ों को संकलित कियागया, कुछ दिन बाद फिर से 20 छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली भरने के लिए दी गयी और उनसे प्राप्त आँकड़ों को एकत्र किया गया। प्रत्येक सही उत्तर के लिए (1) अंक तथा गलत उत्तर के लिए 0 अंक प्रदान किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण

कथन–1: स्त्री शिक्षा रोजगार परक होनी चाहिए–

तालिका 1

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	95%
नहीं	5%

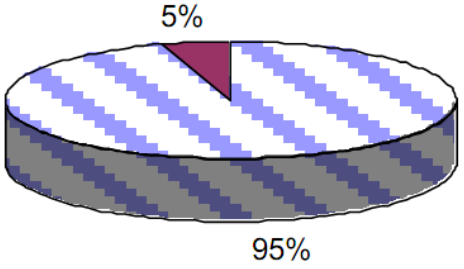

तालिका संख्या 1 से प्रदर्शित होता है कि कथन संख्या–01 के पक्ष में 95: छात्रों ने हाँ में तथा 5: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया नहीं में व्यक्त की। अत: इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि स्त्री शिक्षा रोजगार परक होनी चाहिए।

कथन–2: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में स्त्री तथा पुरुषों को भेद–भाव पूर्ण शिक्षा दी जाती है–

तालिका 2

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	16%
नहीं	84%

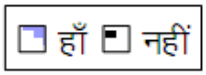

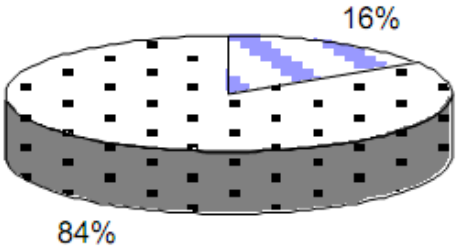

तालिका संख्या 2 के अनुसार कथन संख्या–02 के लिए 16: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया हाँ में तथा 84: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया नहीं में व्यक्त की।

कथन–3: छात्राओं के अभिभावक शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्राओं को प्रेरित करते है–

तालिका 3

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	80%
नहीं	20%

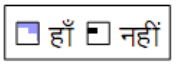

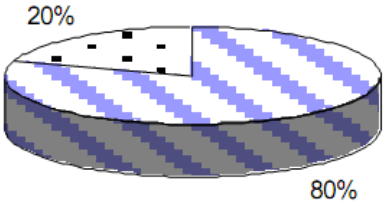

उपर्युक्त तालिका संख्या 3 के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि कथन संख्या–03 के लिए 80: छात्रों ने हाँ में तथा 20: छात्रों ने नहीं में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। यह परिणाम यह संकेत करता है कि अभिभावक शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्राओं को प्रेरित करते हैं।

कथन–4: छात्राओं के अध्यापक–अध्यापिकाऐं विद्यालयों में छात्राओं का सहयोग करते है–

तालिका 4

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	88%
नहीं	12%

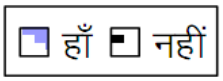

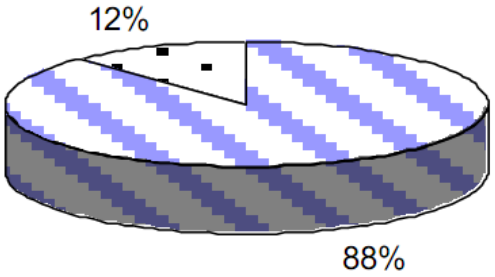

उपर्युक्त तालिका संख्या 4 के अनुसार कथन संख्या–04 के प्रति 88: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया हाँ में तथा 12: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया नहीं में व्यक्त की, अत: इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक–अधपिकाऐं विद्यालयों में छात्रों का अत्यधिक सहयोग करते है।

अध्ययन का महत्व

शायद शिक्षा एक अत्यधिक महत्वपूर्ण जीवन अवसर होता है जो जिन्दगी में विभिन्न सुअवसरों के द्वारों को खोलता है। यह महत्ता और विकास का एक यंत्र होता है इसलिए ही यह सच्चे, स्वतंत्र अनुभव एवं स्वतंत्रता की प्रक्रिया भी होती है। भारतीय सन्दर्भ में जातिवाद, लिंग, धर्म, क्षेत्रवाद भाषा आदि पर असंख्य भेद–भावों से मुक्त है। सुकरात के अनुसार– ''जिस व्यक्ति को सच्चा ज्ञान है, वह सदगुणी के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।'' अधिकांश शिक्षित व्यक्ति कम पक्षपाती होता है, अधिक खुले दिल का मनुष्य आवश्यकता के समय में अपनी धारणाओं पर अड़ा रहने में कम भयभीत होता है। दूसरों की तरह ही वह खुद अपनी माँगों या इच्छाओं के प्रति अधिक खरा होता है, उसको ऐसा ही होना चाहिए।

ग्रन्थ सूची

1. पाठक पी.डी. (2010) , भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऐं। विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

2. अग्रवाल जे.सी. (2010), भारतीय शिक्षा पद्धति संरचना और समस्याऐं, आर्य बुक डिपो दिल्ली।

3. वर्मा जी.एस. (2005), आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्याऐं, लायल बुक डिपो मेरठ।

4. त्यागी, गुरसरन दास (2002), भारत में शिक्षा का विकास, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

5. शर्मा, आर.ए. (2012), शिक्षा अनुसंधान आरकृलाल बुक डिपो मेरठ।

6. कपिल एच.के. (2008), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।